





शनक्रियान्यां सोहः



श्री

नवतत्त्व प्रकरण मूल

शब्दार्थ अने ज्ञावार्थ
साथे.

आचृत्ति सातमी.

उपाधि प्रसिद्ध करनार

आवक भीमसिंह माणेक,

पुस्तक प्रसिद्ध करनार तथा वेचनार.

मांकवी, शाकगद्धी, मुंबई.

निर्णयसागर घापखानामां उपाधि प्रसिद्ध करी.

वीर चंद्र २४४५, विक्रम संवत् १९७५, सन् १९९९.

Printed by Ranchandra Yew Shedge, at the Nirnaya-
sagar Press, 23, Kolhat Lane, Bombay.

Published by Bhanji Maya for Bhimsi Maneck,
225-231, Mandvi, Sankgalli, Bombay.

दशविकाविक सूत्रमां कथन रे के जेणे जीवाजीवना ज्ञाव
नशी जाएरा ते अवृध संयममां स्थिर केम रही शकशे ए वच-
नामृतनुं तात्पर्य एम रे के तमे आत्मा अनात्मानां स्वरूपने
जाएः ए जाणवानी परिपूर्ण आवश्यकता रे।

स्यादाद शैक्षी अनुपम अने अनंत ज्ञावज्ञेदथी जरेली रे।
ए शैक्षीने परिपूर्ण तो सर्वज्ञ अने सर्वदर्शीं जाणी शके,
वर्ता एठेना वचनामृतानुसार आगमउपयोगथी यथाभिति नव
तत्त्वनुं स्वरूप जाएबुं अवश्यनुं रे। ए नव तत्त्व प्रिय धर्मा
जावे जाणवाथी परम वियेकबुद्धि, शुद्ध सम्यक्त्व अने प्रजा-
विक आत्मज्ञाननो उदय आय रे। नव तत्त्वमां दोकादोकनुं
संपूर्ण स्वरूप आवी जाय रे। जे प्रभाणे जेनी बुद्धिनी गति
रे ते प्रभाणे तेऊं तत्त्वज्ञान संवंधी हइ पहोंचाने रे अने
ज्ञावानुसार तेठेना आत्मानी उज्ज्वलता आय रे, ते वर्ने तेऊं
आत्मज्ञाननो निर्मल रस अनुज्ञवे रे। जेनुं तत्त्वज्ञान उत्तम
अने सूक्ष्म रे, तेमज सुशील युक्त जे तत्त्वज्ञानने सेवे नेहोंके
पुरुष मद्दद्

सर्वक्षण जगदाने लोकालोकना संपूर्ण जाव जाएँ। अने जोया, तेनो उपदेश जब्य खोकोने कर्यो। जगदाने अनंत ज्ञान यमे करीने लोकालोकना स्वरूप विषेना अनंत ज्ञेद जाएँ। हता; परंतु सामान्य मानवीजने उपदेशश्च श्रेणीए चंडवा मुख्य देखाता नव पदार्थ तेउए दर्शाव्या, एथी लोकालोकना सर्व जावनो एमां समावेश अइ जाय ठे। निर्ग्रीथ प्रवचननो जे जे सूक्ष्म बोध ठे ते तत्त्वनी हृषिए नव तत्त्वमां समाइ जाय ठे, तेमज सघडा धर्ममतोना सूक्ष्म विचार ए नव तत्त्व विज्ञानना एक देशमां आवी जाय ठे। आत्मानी जे अनंत शक्तिरुदंकाइ रही ठे तेने प्रकाशित करवा अहंत जगदाननो पवित्र बोधे ठे। ए अनंत शक्तिरुद्धारे प्रफुल्लित अइ शके केज्यारे नव तत्त्व विज्ञानमां पारावार ज्ञानी याय।

सूक्ष्म छादशांगी ज्ञान पण ए नव तत्त्व स्वरूप ज्ञानने सहाय रूप ठे। जिज्ञ जिज्ञ प्रकारे ए नव तत्त्व स्वरूप ज्ञाननो बोध करे ठे, एथी आं निःशंक मानवा योग्य ठे के नव तत्त्व जों अनंत जावज्ञेद जाएँ। ते सर्वक्षण अने सर्वदक्षीय योग्य।

ए नव तत्त्व त्रिपदीने जावे सेवा योग्य ठे, हेय, जे अने उपादेय एटखे त्याग करवा योग्य, जाणवा योग्य अने अहण करवा योग्य एम वण ज्ञेद नव तत्त्व स्वरूपन विचारमां रहेला ठे।

तेथी करी नव तत्त्व दरेकने शीखवा जाणवा योग्य ठे, आ तेनी पांच आवृत्ति अगाह उपाइ गइ ते अने आ उडी आवृत्तिटे अमो दरेक आवृत्तिमां मुधारो वधारो करता आव्या त्रीए आ उडी आवृत्तिमां शीखनाराजने मगाई पके ते माझ गणा

मूल पाठ मोटा अक्षरथी छापेल रे, पठी मूल, तेना कूटा शब्दार्थी अने पठी विस्तारथी तेनो ज्ञावार्थ छापेल रे, जो के आ आवृत्तिमां चोपनीना कदमां घणोज बधारे अयेल रे तेमज आ वारीक समयमां कागड़ विगरेना ज्ञाव वंधी गयेखा रे तोपण शीखनाराठने बधारे सवल पके ते सारु तेनी तेज किमत राखी रे.

थी महावीर जगर्वतना शासनमां बहु मत मतांतर पक्षी गयां रे तेनुं मुख्य कारण तत्त्वज्ञान जाणीथी उपासकवर्गनुं द्वादश गयुं, ए रे. मात्र क्रियाज्ञाव पर राचता रह्या, जेनुं परिणाम हृषिगोचर रे. वर्तमान शोधमां आवेदी पृथ्वीनी वसति द्विगन्जग दोढ अवजनी गणाइ रे, तेमां सर्व गद्वनी मखीने जैन प्रजा मात्र वीश लाख रे. ए प्रजा ते श्रमणोपासक रे. एमांथी अमो धारीएठीए के नव तत्त्वने पठनरूपे वे हजार पुरुषो मानु जाएता हशे. मनन अने विचारपूर्वक तो आंगदीने टेरवे गणी शकीए तेटला पुरुषो पण जाएता नहीं हशे.

ज्यारे आवी पतित स्थिति तत्त्वज्ञान संवंधी अह गड रे त्वारेज मतमतांतर वंधी पड्या रे. एक लौकिक कथन रे के “सो शाणे एक मत” तेम श्रानेक तत्त्वविचारक पुरुषोना मतमां जिज्ञाता बहुधा आवती नशी, माटे नव तत्त्व समजया परम आवश्यक रे. ए नव तत्त्व विचार संवंधी प्रत्येक मुनिने अमारी विहसि रे के विवेक अने गुरुगमयी एनुं ज्ञान विशेष वृद्धिमान करयुं; एथी तेझनां पवित्र पंच महात्रत दृढ थशे, जिनेश्वरना वचनामृतना अनुपम आनन्दनी प्रसादी मध्यशे.

अने किया विशुद्ध रहेवाथी सम्यकत्वनो उदय, थशे, परि
एमे जवांत थइ जशे।

किं बहुना !

सातमी आवृत्तिनी प्रस्तावना.

आज दिवस सुधी आ ग्रंथनी भ आवृत्ति उपाइ गइ रहे,
अने आ सातमी आवृत्ति बहार पानामां आवी रहे, तेथी
सपष्ट समजाय रहे के केटलेक अंशे वांचन अने मनन करवानुं
दिवसे दिवसे वधतुं जाय रहे, अमोए आ ग्रंथनी उडी आवृत्तिमां
ज्यां योग्य लाग्युं त्यां वधारो कर्यो रहे, वांचनारने विशेष सरल
रीते समजाय तेम करवानी पूरती संजाळ दीधी रहे, पूर्वावृ-
त्तिमां जे नहोतुं ते वधारवामां आवेद रहे, दोप जेदुं जणायुं
ते काढी नाख्युं रहे अने तेज प्रमाणे आ सातमी आवृत्ति
यथादकि शुद्ध करावी उपावी रहे, आ आवृत्तिमां केटलोक
सुधारो वधारो करवानी इच्छा हती, परंतु इन्फट्युएन्झाना रोगमां
मालंसो सपमायाथी तेनां साधनो माटे ज्यां ज्यां तपास अह
ते निष्फल नीवनी रहे, जेथी हवे पठीनी आवृत्तिमां सुधारो
करवानी इच्छा रहे अने तेने माटे जिझासुउं जे जे सुधारो वधारो
करवा इछता होय तेउने जेम वने तेम जहदीथी सपष्ट रीते
खखी भोकलवा विनंति करवामां आवे रहे।

आ ग्रंथ वनतां सुधी शुद्ध करीनेज उपावेद रहे, उतां मति-
दोप के नजरदोपथी ज्ञालचुक रही होय आगर सिङ्कांत विरुद्ध
उपायुं होय तो सुक्षं वंधुउने सुधारी वांचवा अमो जलामण
करीए रहीए सहेष किं बहुना !

अथानुक्रमणिका प्रारंभः

नवतत्त्वप्रकरण मूल.

१

प्रथम गाथामां नव तत्त्वनां दक्षण सहित नाम,	२३
तथा ए नव तत्त्वमां कथां कथां तत्त्व जाणवा योग्य,	२४
ग्रहण करवा योग्य अने त्याग करवा योग्य ते ?	२५
ते, तथा प्रकारांतरे न्यूनाधिक तत्त्व पाण कहाँ ते.	२६
प्रत्येक तत्त्वना उत्तर ज्ञेद कहीने तैमां रूपी केटलां	२७
श्वने आरूपी केटलां ? तेनी संख्या यंत्र सहित	२८
देखासी ते.	२९
प्रथम जीवतत्त्वनो विचार.	३०
जीवना चेतनादिक उ प्रकार कहा ते.	३१
जीवतत्त्वना चौद ज्ञेद कहा ते.	३२
प्रकारांतरे वत्रीश ज्ञेद जीवना कहा ते.	३३
जीवना पांचसो ने त्रिसठ ज्ञेद कहा ते.	३४
जीवनां ज्ञानादि दक्षण कहाँ ते.	३५
उ पर्यासिनुं स्वरूप कहुँ ते.	३६
जे जीवने जेटली पर्यासि होय ते कही ते.	३७
एकेन्द्रियने विकलेन्द्रिय कहेवानुं कारण.	३८
प्राण अने पर्यासिनुं विशेषपाणुं कहुँ ते.	३९
आहारपर्यासिने प्रथम कहेवानुं कारण.	४०
पांच इंद्रियोना वत्रीश विषय कहा ते.	४१
दश प्राणनां नाम कहाँ ते.	४२
कथा जीवते केटला प्राण होय । ते कहेला ते.	४३

२ वीजा अंजीयतत्त्वनो विचार.	४०
" अंजीयतत्त्वना चौद ज्ञेद कहा गे.	४०
" अंजीयतत्त्वना मूळ पांच ज्ञेद कहा गे.	५०
" पुरुषजन्यनु अंगापिक खण्ड कहुँ गे.	५०
" कालजन्यना सामयादि ज्ञेद कहा गे.	५५
" उ जन्यमां परिणामादिक घार ज्ञेद कहा क्या जन्यमां लाजे ? ते कहा गे.	५५
" उ जन्यमां खण्ड विस्तारे कहाँ गे.	६०
" पंचस्तिकायनु वर्तनादि पर्यायरूप उँड कालजन्य केवी रीते गे ? इत्यादि कालजन्यनु स्वरूप काँडक विशेषे कहुँ गे.	६०
नव तत्त्वमां जीवतत्त्वनी मुख्य प्रस्तुता कही आने उ जन्यमां प्रथम पर्मस्तिकायनी मुख्यता कही, तेना हेतु आदिक वीजी पण केटकीएक आशंकाठनां रामाधानं करेखाँ गे.	६०
३ वीजा पुण्यतत्त्वनो विचार.	६०
" पुण्य नव प्रकारे वंधाय, तेनां नाम.	६०
" शातवेदनीयादिक वेतालीश पुण्यप्रकृतिए करी पुण्य जोगवाय, तेनां नाम.	६०
४ चोथा पापतत्त्वनो विचार.	७०
" पाप अढार प्रकारे वंधाय, तेनां नाम.	७०
" ज्ञानावरणीयादिक व्याशी पापप्रकृतिए करी पाप जोगवाय, तेनां नाम.	७०

पाचमा आश्रयतत्त्वना। पृष्ठा ८	८
पांच इक्षिय, चार कपाय, पांच अग्रत अने ब्रण योग,					
सही सत्तर ज्ञेदनां नाम.					४१
इव्याश्रव अने ज्ञावाश्रवनुं स्वरूप.					४१
पञ्चीश कियाउनां नाम तथा सद्गुण....	४२
पञ्चीश कियाउनां विशेष स्वरूप कह्यां छे.	४३
ठाच संवरतत्त्वनो विचार.	१०१
इव्यसंवर अने ज्ञावसंवरनुं स्वरूप.	१०१
संवरतत्त्वना सत्तावन ज्ञेदनां नाम.	१०२
पांच समिति अने ब्रण गुणिनुं स्वरूप.	१०३
वावीश परिसहनुं स्वरूप.	१०४
कयो परिसह कया कर्मना छद्यथी थाय.	१२३
कया गुणघाणे कयो परिसह थाय.	१२४
दश प्रकारे धतिधर्म प्रतिज्ञेद सहित....	१२५
बार ज्ञावनानुं वर्णन.	१२६
सामाधिक चारित्रनुं स्वरूप.	१२७
ठेदोपस्थापनीय चारित्रनुं स्वरूप.	१२८
परिहारविशुद्धि चारित्रनुं स्वरूप.	१२९
सूक्ष्मसंपराय चारित्रनुं स्वरूप....	१३०
यथाख्यात चारित्रनुं स्वरूप.	१३१
सातमा निर्जरातत्त्वनो विचार.	१३२
इव्य अने ज्ञावनिर्जरानुं स्वरूप.	१४१
आगाथामां प्रसंगे आवेदा धंधतत्त्वना चार ज्ञेद					
संक्षेपे कह्यां छे.	१४२

- २ वीजा अंजीवतत्त्वनो विचार. १०८
- “ अंजीवतत्त्वना चाँद जेद कह्या थे. १०८
- “ अंजीवतत्त्वना मूल पांच जेद कह्या थे. १०८
- “ पुज्जलज्ज्वन्तुं श्रीपाधिक लक्षण कह्युं थे. १०८
- “ काद्वज्ज्वन्ता समयादि जेद कह्या थे.... १०८
- “ उ ज्ज्वमां परिणामादिक घार जेद कया कया ज्ज्वमां
लाजे ? ते कह्या थे. १०८
- “ उ ज्ज्वमां लक्षण विस्तारे कह्यां थे. १०८
- “ पंचास्तिकायन्तुं वर्त्तनादि पर्यायरूप उहुं काद्वज्ज्व
केवी रीते थे ? इत्यादि काद्वज्ज्वन्तुं स्वरूप कांइक
विशेषे कह्युं थे. १०८
- “ नव तत्त्वमां जीवतत्त्वनी मुख्य प्रस्तुपणा कही आने
उ ज्ज्वमां प्रथम धर्मास्तिकायनी मुख्यता कही, तेना
हेतु आदिक वीजी पण केटडीएक आशंकाहेनां
समाधान करेलां थे. १०८
- ३ त्रीजा पुण्यतत्त्वनो विचार. १०८
- “ पुण्य नव प्रकारे वंधाय, तेनां नाम. १०८
- “ शातावेदनीयादिक वैताकीजा पुण्यप्रकृतिए करी पुण्य
जोगवाय, तेनां नाम. १०८
- ४ चोया पापतत्त्वनो विचार. १०८
- “ पाप अढार प्रकारे वंधाय, तेना नाम. १०८
- “ ज्ञानावरणीयादिक व्याही पापप्रकृतिए करी पाप
जोगवाय, तेनां नाम. १०८

अनुक्रमणिका

पांचमा आश्रवतत्त्वनो विचार.	८०
पांच इंजिय, चार कपाय, पांच अन्नत अने त्रण योग,		
मर्दी सत्तर जेदनां नाम.		८१
जब्याश्रव अने जावाश्रवनुं स्वरूप.		८२
पचीश क्रियाउनां नाम तथा लहण....	८३
पचीश क्रियाउनां विशेष स्वरूप कद्यां दे.	८४
बच्चो संवरतत्त्वनो विचार.		१०१
जब्यसंवर अने जावसंवरनुं स्वरूप.		१०२
संवरतत्त्वना सत्तावन जेदनां नाम.		१०३
पांच समिति अने त्रण गुष्ठिनुं स्वरूप.	१०३
बाबीश परिसहनुं स्वरूप.		१०५
कयो परिसह कया कर्मना लदयथी थाय. ...		१२३
कया गुणवाणे कयो परिसह थाय. ...		१२४
ददा प्रकारे यतिधर्म प्रतिज्ञेद सहित....	१२६
वार जावनानुं वर्णन.		१२८
सामायिक चारित्रनुं स्वरूप.		१३०
ठेदोपस्थापनीय चारित्रनुं स्वरूप.	
परिहारविशुद्धि चारित्रनुं स्वरूप.	
सूधासंपराय चारित्रनुं स्वरूप....		
यथाख्यात चारित्रनुं स्वरूप. ...		
३ सातमा निर्जरातत्त्वनो विचार		
“जब्य अने जावनि		
“आ गायामां प्रसंगे		
संलेपेच्छार दे.		

“ उ प्रकारनां वाणि तपतुं स्वरूप प्रत्येक तपना, उत्तर ज्ञेद सहित देरास्तुं त्रे....	३४
“ उ प्रकारनां अन्यतर तपमां प्रथम प्रायश्चित्त तप दश ज्ञेद सहित करुं त्रे.	३५
“ वीजुं विनय तप सात ज्ञेदे करुं त्रे.	३५
“ वीजुं वैयायज्ञ तप दश ज्ञेदे करुं त्रे....	३५
“ चोषुं स्वाध्याय तप पांच ज्ञेदे करुं त्रे.	३५
“ पांचमुं प्यान तप आर्त, रौद्र, धर्म अने शुक्रज, ए चार ज्ञेदे करुं त्रे.	३५
“ उं कायोत्सर्ग तप वे ज्ञेदे करुं त्रे.	३५
“ आठमा वंधवत्त्वनो विचार.	३५
“ मोदक दृष्टांते कर्मवंधना चार ज्ञेद.	३५
“ आठ कर्मना स्वज्ञाय दृष्टांतपूर्वीक.	३६
“ आठ कर्मनी उत्तर प्रकृतिनी संख्या....	३६
“ आठ कर्मनो उत्कृष्ट स्थितिवंध.	३६
“ आठ कर्मनो जंघन्य स्थितिवंध.	३६
“ रसवंधनुं संक्षेपथी स्वरूप.	३७
“ ग्रदेशवंधनुं संक्षेपथी स्वरूप.	३७
“ नवमा मोहतत्त्वनो विचार.	३७
“ उत्त्वना नव ज्ञेदनां नाम....	३७
“ स्वरूप प्रथम ज्ञेदनो अर्थ,	३७
“ उत्तर धास्त्र मार्गणा.	३७
“ उत्तर करतां धास्त्रं मार्गणस्थानमार्यी	३७

ते मार्गणाए अतीतकाले सिद्ध थया, ते मार्गणानां	१७१
ताम्	१७२
वीजा ज्व्यप्रमाण घारथी मांसीने नवमा अद्वयहुत्य	
घार पर्यंत आउ घार अनुकमे वर्णव्यां हे. जेमके	
ज्व्यप्रमाण घार एटले सिद्धनां जीवज्व्य केटलां हे ५ १७३	
नव तत्त्वने जाणवानुं फल कहुं हे.	१७४
सम्यक्त्वनुं स्वरूप कहुं हे.	१७५
सम्यक्त्व पाम्यानुं फल कहुं हे.	१७६
पुजापरावर्त्तनुं मान कहुं हे.	१७७
सिद्धजीवोना पंदर ज्ञेद कहा हे.	१७८
सिद्धना पंदर ज्ञेदनां उदाहरण.	१७९



एक अनिप्राय.

श्री आवकनुं कर्तव्य तथा विविध स्तवनादि । सभु
 ज्ञय ग्रंथ, प्रकाशक आवक जीमसिंह माणेक, सुंबह जुनामां जुन
 जैन पुस्तको प्रसिद्ध करनार, जैन साहित्य बहार पानवानी पदेश करनार
 आवक भीमसिंह माणेकनुं नाम जैन समाजमां मशहुर छे.
 तेउना तरफथी अनेक ग्रंथो, उपयोगी ग्रंथो अल्यार सुधीमां घण्यो जागे
 शुद्ध अने सख्त प्रसिद्ध करवामां आव्या छे, जेमां था ग्रंथे एक वधु
 ग्रंथनी वृद्धि करी छे. आ ग्रंथमां प्रथम संस्कारां प्रातःसारणीय चंदो
 स्तवनो, बीजामां देरासरे जवानी विधि तथा चैत्यवंदनविधि, बीजामां तिथिं
 विगोरेना चैत्यवंदन, स्तवनो अने थोयो, चोथामां चोबीदी स्तवन तथा
 चैत्यवंदन, पांचमामां प्रकीर्ण तीर्थ विगोरेना स्तवनो, बछामां उपदेशी पदो,
 सातमामां सज्जायो, आठमामां लावणी विगोरे नाटकना रागनां प्रञ्जुस्तवनो
 अने दशमामां नवसरणादि विगोरे विषयो आपवामां आव्यां छे. आ दश
 प्रकरणमां जे जे आपवामां आवेद छे ते प्रचलित तेमज केद्वाक नवा
 पर्खु तमाम पूर्णाचायों कृत होइने दरेकने नित्य किया माटे खास उप-
 योगी छे; यंकी घण्यामायी चुंटणी करेखी होवायी एक ग्रंथरूपे करेख
 प्रसिद्ध आवकारदायक छे. प्रस्तावनामां देवदर्शनमदिग्मा तेमज प्रतिमा-
 पूजानुं निरूपण अने चैत्यवंदनविधि आपी तेनी सुंदरतामां वधारो करेदो छे.
 सुंदर शाक्खी टाइपमां सारा कागळ ऊपर छपावी सुंदर वाईमीगर्थी अद्वंकृत
 करेद छे, जेयी ते जैनो माटे अवश्य खरीदवी खायक रे अने उपयोगी छे.
 अमो प्रकाशकने आवा ग्रंथो प्रसिद्ध करवा माटे धन्यवाद आपीए चीए.
 (आत्मानंद प्रकाश.) } शाक्खी अद्वरनी. कि. २-०-०
 } गुजराती „ „ कि. ३-८-३
 मल्कवानुं छेकाण श्रा जीमसिंह

॥ श्रीनवत्स्वप्रकरणं भारतः ॥

जीवाऽजीवा पुणं,
पावाऽस्व संवरोय निजरणा ॥
बंधो मुखो य तहा,
नव तत्ता हुंति नायद्वा ॥ १ ॥
चउदस चउदस बाया,-
लीसा बासी अ हुंति बायादा ॥
सत्तावन्नं वारस,
चउ नव नेआ कमेणेसि ॥ २ ॥
एगविह छविह तिविहा,

चउघिहा पंच उघिहा जीवा ॥
 चेयण तस इयरेहि,
 वेय गई करण काएहि ॥ ३ ॥
 एगिंदिय सुहुमियरा,
 सन्नियर पणिंदिआ य स वि ति
 चउ ॥ अपजत्ता पजत्ता,
 कमेण चउदस जियठाणा ॥ ४ ॥
 नाणं च दंसणं चेव,
 चरित्तं च तवो तहा ॥
 वीरियं उवओगो अ,
 एअ्रं जीवस्स लखणं ॥ ५ ॥
 आहार सरीर ऊंदिय.

पञ्जती आणपाण न्नासमणे ॥
 चउ पंच पंच रुपित्र,
 इग विगलासन्नि सन्नीणं ॥६॥
 परिंदित्रि त्ति वखूसा,-
 साउ दस पाण चउ रुसग अठ ॥
 इग छुति चउरिंदीणं,
 असन्नि सन्नीण नव दस य ॥७॥
 ॥ इति जीवतत्त्वम् ॥
 धम्माऽधम्माऽऽगासा,
 तिय तिय न्नेया तहेव अन्धा य ॥
 खंधा देस पएसा,
 परमाण अजीव चउदसहा ॥८॥

धर्माऽधर्मा पुण्डल,
नह कालो पञ्च हुंति अजीवा ॥
चलणसहावो धर्मो,
यिरसंगणो अहर्मो आ ॥ १० ॥
अवगाहो आगासं,
पुण्डल जीवाण पुण्डला चउहा ॥
खंधा देस पएसा,
परमाणू चेव नायद्वा ॥ ११ ॥
सहंधयार उज्जोअ,
पज्जा ग्राया तवेहि आ ॥
वस्तु गंध रसा फासा,
पुण्डलाण तु लखण ॥ १२ ॥

एगाकोडि सतसठि,
 दख्का सत्तहुत्तरी सहस्राय ॥
 दोयसया सोखहिया,
 आवलिया इग मुहुत्तम्मि ॥१६॥
 समयाऽवली मुहुत्ता,
 दीहा पर्खा य मास वरिसाय ॥
 ज्ञणिअं पलिअं सागर,
 उस्सप्पिणी सप्पिणी काढो ॥१७॥
 परिणामि जीव मुत्तं,
 सपएसा एग खित्त किरिअय ॥
 पिच्चं कारण कत्ता,
 सद्वगय इयर अप्पेसे ॥१८॥

॥ इत्यजीवतत्त्वम् ॥
 सा उच्चगोअं मणुद्गुग,
 सुरद्गुग पंचेदिजाइ पणदेहा ॥
 आइ तितणूणुवंगा,
 आइम संघयण संगाणा ॥ २५ ॥
 वणचउक्काइगुरुदहु,
 परधा ऊसास आयवुज्जोअं ॥
 सुन्नखंगइ निभिण तस दस,
 सुर नर तिरिआउतित्थयरं ॥ २६ ॥
 तस बायर पञ्जत्तं,
 पत्तेअ घिरं सुन्नं च सुन्नगं च ॥
 सुस्सर आइज जसं,

तसाइदसगं इमं होइ ॥ १७ ॥
 ॥ इति पुण्यतत्त्वम् ॥
 नाणंतराय दसगं,
 नव बीए नीअसाय मिडत्तं ॥
 आवर दस नरय तिगं,
 कसाय पणवीसतिरिय छुगं ॥ १८ ॥
 इग बि ति चउ जाईओ,
 कुखगइ उवघाय हुंति पावस्स ॥
 अपसत्थं वण चऊ,
 अपढम संघयण संगाणा ॥ १९ ॥
 आवर शुहुम अपऊं,
 साहारण-मथिर-मसुज्ज छज्ज-

(५)

गाणि ॥ छुस्सर णाइजाजसं,
थावर दसगं विवज्जत्यं ॥ ४० ॥
॥ इति पापतत्त्वम् ॥
इंदिअ कसाय अब्बय,
जोगा पंच चउ पंच तिन्नि कमा ॥
किरिआओ पणवीसं,
इमा उताओ अएुकमसो ॥ ४१ ॥
काइअ अहिगरणीया,
पाउसिया पारितावणी किरिया ॥
पाणाइवाइ रंन्निअ,
परिग्गहिया मायवत्तिअ ॥ ४२ ॥
मिहादंसणवृत्ती,

(४)

अप्पच्चरकाणाय दिठि पुठिअ ॥
पामुच्चिअ सामंतो,-
वणीअ नेसत्यि साहत्यी ॥४३॥
आणवणि विआरणिआ,
आणज्ञोगा आणवकंखपच्चइआ।
आन्ना पत्रोग समुदा,-
ए पिङ्गदोसेरिआवहिआ ॥४४॥
॥ इत्याश्रवतत्त्वम् ॥
समिई गुत्ति परीसह,
जइधम्मो ज्ञावणा चरित्ताणि ॥
पण ति छवीस दस बार,-
स पंच ज्ञेषुहिं सगवन्ना ॥४५॥

(१०)

इरिया ज्ञासैसणादाणे,
उच्चारे समिई सु अ ॥
मणगुत्ति वयगुत्ति,
कायगुत्ति तहैव य ॥ ४६ ॥
खुहा पिवासा सी उएहं,
दंसा-चेला-रझ-डिओ ॥
चरिआ निसिहिया सिझा,
अकोस वह जायणा ॥ ४७ ॥
अलाज्ज रोग तणफासा,
मल सकार परीसहा ॥
पन्ना अन्नाण सम्मतं,
इअ बावीस परीसहा ॥ ४८ ॥

खंती महव अर्जुव, ॥२१॥
 मुत्ती तव संजमे अ बोधवै ॥
 सचं सोअं आकिं,-
 चणं च बन्नं च जइधम्मो ॥४४॥
 पठम-मणिच्च-मसरणं,
 संसारे एगया य अन्नतं ॥
 असुइत्तं आसव सं,-
 वरो अ तहणिज्जरा नवमी ॥३४॥
 लोगसहावो बोही,
 उद्धहाधम्मस्संसाहगा अरिहा ॥
 एआओ जावणाओ,
 जावेअद्वा पयत्तेण ॥ ३९ ॥

सामाइ अत्थ पठमं,
 हेऽग्रोवठावणं ज्ञवे बीच
 परिहारविसुद्धीयं,
 सुहुमं तह संपरायं च ॥ ३४ ॥
 तत्तो आ अहरकायं,
 खायं सद्वंभि जीवलोगंभि ॥
 जं चरिक्ण सुविहिंआ,
 चर्चंति अयरामरं गणं ॥ ३५ ॥
 ॥ इति संवरतत्त्वम् ॥ ३६ ॥
 वारसविहं तवो णि,-
 जराय वंधो चउविगप्पो आ ॥
 पृथर्द्द छिइ अगाउज्जाग

(१३)

पएस न्नेएहिं नायद्वो ॥ ३४ ॥
अणसण-मूणोअरिया,
वित्तीसंखेवणं रसच्चात्रो ॥
कायकिलेसो संखी,-
एया य बज्जो तवो होई ॥ ३५ ॥
पायबित्तं विणत्रो,
वेयावचं तहेव सद्वात्रो ॥
ज्ञाणं उस्सग्गोविअ,
अस्त्रितरत्रो तवो होई ॥ ३६ ॥
॥ इति निर्जनरातत्त्वम् ॥
पयइ सहावो वुत्तो,
रिइ कालावहारणं ॥

(३४)

अएुन्नागो रसो ऐओ,
पएसो दखसंचओ ॥ ३५ ॥
पहु पमिहारसि मद्व,
हमु चित्त कुखाख नर्मगारीए ॥
जह एएसिं ज्ञावा,
कस्माणविज्ञाए तह ज्ञावा ॥ ३६ ॥
इह नाण दंसणावर,-
ए वेय मोहाउ नोम गोआण ॥
विझं च पण नव छु अ,-
ठवीस चउतिसयछुपणविहं ॥ ३७ ॥
नाए अ दंसणावरए,
वेआणिए चेव अंतराण अप ॥

तीसं कोमाकोमी,
 अयराणं रिइ अ उकोसा ॥ ४० ॥
 सत्तरि कोमाकोमी,
 मोहणिए वीस नाम गोएसु ॥
 तित्तीसं अयराइ,
 आजठिइ बंध उकोसा ॥ ४१ ॥
 वारस मुहुत्त जहना,
 वेयणिए अठ नाम गोएसु ॥
 सेसाणंतमुहुत्तं,
 एयं बंधठिइ माणं ॥ ४२ ॥
 ॥ इति बंधतत्त्वम् ॥
 संतप्य परुवणया,

(१६)

द्वपमाणं च खित्त फुसणाय ॥
कालोद्य अंतर ज्ञाग,
ज्ञावे अप्पावहु चेव ॥ ४३ ॥
संतं सुष पयत्ता,
विजंतं खकुसुमव न असंतं ॥
मुखति पयं तस्सञ्ज,
पर्वणा मगणाईहि ॥ ४४ ॥
गइ इंदीए काए,
जोए वेए कसाय नाए य ॥
संजम दंसण लेसा,
जव सम्मे सन्नि आहारे ॥ ४५ ॥
नरगइ पणिंदि तस जव.

सन्नि अहरकाय खइअसमते॥
 मुखोणाहार केवल,
 दंसण नाणे न सेसेसु ॥ ४६ ॥
 दवपमाणे सिष्ठा,-
 एं जीवद्वाणि हुंति एंताणि ॥
 लोगस्स असंखिङ्गे,
 ज्ञागे इकोय सञ्चेवि ॥ ४७ ॥
 फुसणा अहिआ कालो,
 इग सिष्ठ पफुच्च साइओएंतो ॥
 पडिवायाज्ञावाओ,
 सिष्ठाएं अंतरं नत्यि ॥ ४८ ॥
 सबंहि । । । । । । । । । ।

ज्ञागे ते तेसिं दंसणं नाणं ॥
 खइए ज्ञावे परिणा,-
 मि एथ्र पुण होइ जीवत्तं ॥४८॥
 थोवा नपुंस सिद्धा,
 त्थी बर सिद्धकमेइ संगवगुणा ॥
 इथ्र मुख तत्तमेअं,
 नव तत्ता लेसओ ज्ञणिआ ॥५९॥
 जीवाइ नव पयत्थे,
 जो जाणइ तस्स होइ सम्मतं ॥
 ज्ञावेण सहहंतो,
 अथाणमाणेवि सम्मतं ॥५१॥
 सद्वाइ जिएसर ज्ञा:- ।

सिआई वयणाई नन्नहा हुंति ॥
 इह बुद्धी जस्स मणे,
 सम्मतं निच्छब्दं तस्स ॥ ५७ ॥
 अंतोमुहुत्त मित्त,-
 पि फासिअं हुज्ज जेहिं सम्मतं ॥
 तेसि अवहु पुग्गद,
 परिअद्वो चेव संसारो ॥ ५८ ॥
 उस्सप्पिणी अणंता,
 पुग्गद परिअद्वओ मुणेअद्वो ॥
 तेणंतातीअद्वा,
 अणागयद्वा अणंतगुणा ॥ ५९ ॥
 जिण अजिण तित्थतित्या,

गिहि अन्न सलिंग थी नरन पुंसा ॥
 पत्तेआ सयंवुद्धा,
 बुद्धबोहिय सिद्ध एकाय ॥५५॥
 जिणसिद्धा अरिहंता,
 अजिणसिद्धाय पुंमरिआ पसुहा ॥
 गणहारि तित्थसिद्धा,
 अतित्थसिद्धाय मरुदेवी ॥ ५६॥
 गिहिलिंग सिद्ध जरहो,
 वट्कदचीरीय अन्नलिंगम्मि ॥
 साहू सलिंगसिद्धा,
 थीसिद्धा चंदणा पसुहा ॥५७॥
 पुंसिद्धा गोयमाई

गांगेयपमुह नपुंसया सिद्धा ॥
 पत्तेय सयंबुद्धा,
 जणिया करकंरु कविबाई॥५७॥
 तह बुद्धबोहि गुरुबो,-
 हिया इग समय इग सिद्धाय ॥
 इग समएवि अणेगा,
 सिद्धा ते एगसिद्धाय ॥ ५८ ॥
 इति मोहतत्त्वम् ॥
 इति श्रीनवतत्त्वं समाप्तम् ॥



વિદ્યાનોને તથા વિદ્યાર્થીઓને

ખાસ મનત કરવા યોગ્ય ઘંથો.

ર કર્મઘંથ વાદાવવોપ સાથે	૫-૮-૦
દંમક લઘુસંઘયણી	૦-૮-૦
જીવવિચાર પ્રકારણ	૦-૬-૦
લઘુ પ્રકારણસંગ્રહ	૧-૮-૦
પિતાનો પૂત્ર પ્રત્યે ઉપદેશ	૦-૩-૦
ચારિત્રસુધારણુ સંબંધી શિક્ષણ	૦-૨-૦
બાઢ રવભન રહ્યાન્ય સચિવ	૦-૨-૦
આવક કર્તવ્ય જ્ઞાન્બી	૧-૦-૦
સંદર ગુજરાતી	૧-૮-૦

લખો-આવક જીમસિંહ માણેક,

જૈન પુસ્તક વેચનાર તથા પ્રસિદ્ધ કરનાર.

માંકવી, સુંબદ.

॥ श्रीवीतरागाय नमः ॥

॥ अथ ॥

॥ श्रीवालाववोधसहितं नवतत्त्वप्रकरणं ॥
॥ प्रारम्भ्यते ॥

श्रीवीरजिनं नत्वा, मत्वा तद्विष्णावचकं च ॥
नवतत्त्वार्थविवरणं, कुर्वेऽहं वालवोधाय ॥ ३ ॥
हवे प्रथम नव तत्त्वनां नाम कहे छे.
आर्यावृत्तं.

जीवाऽजीवा पुरुषं, पावाऽसव संवरो
य निजरणा ॥ वंधो मुखो य तहा,
नव तत्ता हुंति नायद्वा ॥ २ ॥

गाथा २ लीना दूटा शब्दना अर्थ.

जीवा=जीवतत्त्व.

वंधो=वंधतत्त्व.

अजीवा=अजीवतत्त्व.

मुखो=मोद्धतत्त्व.

पुरुषं=पुरुषतत्त्व.

तहा=तेमज.

पावा=पापतत्त्व.

नव=नव

आसव=आश्रवतत्त्व.

तत्ता=तत्त्वो.

संवरो=संवरतत्त्व.

हुंति=छे.

निजरणा=निजरातत्त्व.

नायद्वा=जाणवा योग

विस्तारार्थः—द्युवहार नये करी जे शुचाशुज, कर्मोनो कर्ता, हर्ता तथा चोक्ता थे, अने निश्चय नये करी ज्ञान, दर्शन तथा चारित्ररूप निज गुणोनोज कर्ता तथा चोक्ता थे अथवा छुःख सुख ज्ञानोपयोगलक्षणवंत चेतना सहित होय तथा प्राण धारण करे तेने प्रथम (जीवा के^०) जीवतत्त्व कहीए; तेथी विपरीत जे चेतना रहित जम खजाववालो होय तेने बीजुं (अजीवा के^०) अजीवतत्त्व कहीए; जेणे करी शुच कर्मनां पुज्जलोनो संचय यवाधी सुखनो अनुज्जव याय थे तेने ब्रीजुं (पुण्ण के^०) पुण्यतत्त्व कहीए; तेथी विपरीत जेणे करी अशुज कर्मनां पुज्जलोनो संचय यवाधी छुःखनो अनुज्जव याय थे तेने चोशुं (पावा के^०) पापतत्त्व कहीए; जेणे करी नवां कर्म वंधाय थे, अशुज कर्मोपादानहेतु हिंसादिक तेने पांचमुं (आसव के^०) आश्रवतत्त्व कहीए; जेणे करी आवतां कर्म रोकाय, अर्थात् पांच समिति अने त्रण गुस्ति तेणे करी जे आश्रव रोध करवो तेने रहुं (संवरो के^०) संवरतत्त्व कहीए; जेणे करी आत्मप्रदेश-

मांथी देश यकी कर्म जूदां थाय रे, अथवा पूर्वे
 करेलां कर्मोनो जे क्षय थाय रे, एटले तप प्रमुखे
 करी कर्मनुं पंचावबुं थाय रे तेने सातमुं (निझ-
 रणा के०) निर्जरातत्त्व कहीए; जे नवां कर्मोनुं
 ग्रहण करीने तेनी साथे जीवनुं वंधन थबुं, कीर
 नीरनी पेरे मली जबुं थाय, तेने आठमुं (वंधो
 के०) वंधतत्त्व कहीए अने जे आत्मग्रदेश यकी
 सर्वथा कर्मोनो क्षय थवो तेने नवमुं (मुखो के०)
 मोक्षतत्त्व कहीए; ए नव तत्त्वरूप वस्तुनुं यथास्थित
 स्वरूप जे प्रमाणे सिद्धांतोने विषे कहुं रे, (तहा के०
 तेमज सम्यगृहष्टि जीवोने ए (नव तत्त्वा के०) नव
 तत्त्वो तेहा परिज्ञाए करी (नायवा के०) जाणवा
 योग्य (हुंति के०) रे; अने केटलांएक प्रत्याख्यान
 परिज्ञाए करी गांमवा योग्य रे. मूलमां वे ठेकाए
 जे यकार वापस्यो रे ते चकार वाचक होवाथी
 उच्चयान्वयी अव्यय समजी लेवो. ते चकारथी ए
 नव तत्त्वने विषे सर्व पदार्थोनो समावेश थाय रे,
 अर्थात् एथी वधारे तत्त्व कोइ नथी, एवी सूचना
 करी रे ॥ ३ ॥

ए नव तत्त्व मादेलां जीव अने अजीव, ए वे

तत्त्व मात्र जाणवा योग्य रे. पुण्य, संवर, निर्जरा अने
मोक्ष, ए चार तत्त्व ग्रहण करवा योग्य रे, परंतु
एमांनुं पुण्यतत्त्व जे रे ते व्यवहार नये करी थाव-
कोने ग्रहण करबुं योग्य रे अने निश्चय नय वडे
त्याग करबुं योग्य रे, तेमज मुनिने उत्सर्गे त्याग
करबुं योग्य रे अने अपवादे ग्रहण करबुं योग्य रे,
तथा पाप, आथ्रव अने वंध, ए त्रण तत्त्व तो
सर्वथा सर्वने त्याग करवा योग्यज रे ॥ उक्तं च ॥
हेया वंधाऽस्तव पा-वा जीवाऽजीव हुंति विवेया ॥
संवर निङ्कर मुखो, पुण्य हुंति उवाए ॥ ३ ॥

ए नव तत्त्वनां नाम कहां, अन्यथा संकेपयी
तो जीव अने अजीव, ए वे तत्त्वज श्रीराणांग मांहे
कहां रे, ते केमके जीवने पुण्य तथा पापनो संजव
रे तथा कर्मनो वंध पण तादात्मिक रे अने कर्म
जे रे ते पुज्जल परिणाम रे अने पुज्जल ते अजीव
रे, तथा आथ्रव जे रे ते पण मिथ्यादर्शनादिरूप
उपाधिए करी जीवनो मक्षिन स्वज्ञाव रे, ए पण
आत्माना प्रदेश अने पुज्जल विना वीजो कोइ नयी,
तथा संवर जे रे ते पण आथ्रव निरोध लक्षण
देश सर्व नेदे आत्मानो निवृत्तिरूप स्वज्ञाव एनि-

एम ज्ञानात्मक रे, तथा निर्जरा जे रे ते पण
जीव अने कर्मने पृथक् उपजाववाने कारणे दधि
मथन मंथान न्याये करी कर्मनो परिशाट रे, तथा
सर्व शक्तिए करी सकल कर्म छुःखनो क्षय नव-
नीत गत दग्ध जल निर्मल घृत प्रगटनरूप दृष्टांते
चिदानन्दमय आत्मानुं प्रगट थवुं ते मोहातत्त्व रे,
ते माटे जीव अने अजीव ए वे तत्त्वज कहीए.

तथा अन्यत्र मतांतरे सात तत्त्व पण रे, केमके
पुण्य अने पाप, ए वे तत्त्वनो अंतर्जीव वंधतत्त्व
मांहेज थाय रे, कारण के जे शुज्ज प्रकृतिकर्म-
वंध ते पुण्यतत्त्व अने अशुज्ज प्रकृतिकर्मवंध
ते पापतत्त्व रे, माटे पुण्य पाप रहित सात
तत्त्व कहीए. तेमज बढ़ी पांच तत्त्व पण कह्यां रे,
इत्यादिक घणो विस्तार विशेषावश्यक तथा तत्त्वार्थ
अने लोकप्रकाशादि ग्रंथो थकी जाणवो.

हवे प्रत्येक तत्त्वना जूदा जूदा ज्ञेद कहे रे.

चउदस चउदस वाया,—खीसा वासी
अ हुंति वायाला ॥ सत्तावन्न वारस,
चउन्न जेआ कमेणेसिं ॥ ३ ॥

गाथा २ जीना दूटा शब्दना अर्थ.

चउदस=चौद.	वारस=वार.
वायालीसा=वेंतालीश.	चठ=चार.
वासी=व्याशी.	नव=नव.
हुंति=याय ठे.	जेआ=जेदो.
वायाला=वेंतालीश.	कमेणेसिं=अनुकमे करी.
सत्तावन्नं=सत्तावन.	

विस्तारार्थः—प्रथम जीवतत्त्वना (चउदस के०) चौद, बीजा अजीवतत्त्वना (चउदस के०) चौद, त्रीजा पुण्यतत्त्वना (वायालीसा के०) वेंतालीश, चोथा पापतत्त्वना (वासी के०) व्याशी, पांचमा आश्रवतत्त्वना (वायाला के०) वेंतालीश, ठडा संवरतत्त्वना (सत्तावन्नं के०) सत्तावन, सातमा निर्जरातत्त्वना (वारस के०) वार, आठमा वंधतत्त्वना (चठ के०) चार अने नवमा मोहकतत्त्वना (नव के०) नव, एवी रीते (कमेणेसिं के०) एकमे करी (जेआ के०) जेद (हुंति के०) याय ठे.

उपर कहेलां नव तत्त्वना सर्व जेदनी संख्या वसें ने ठोंतेर याय ठे. तेउमां अठ्याशी जेद अरुषी ने जग्ने गंकम्बो ने अग्राही लेन्ड झाँ त्रे ॥